25-02-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - तुम ब्राह्मण सो देवता बनते हो, तुम्हीं भारत को स्वर्ग बनाते हो, तो तुम्हें अपनी ब्राह्मण जाति का नशा चाहिए"

प्रश्नः-सच्चे ब्राह्मणों की मुख्य निशानियां क्या होंगी?

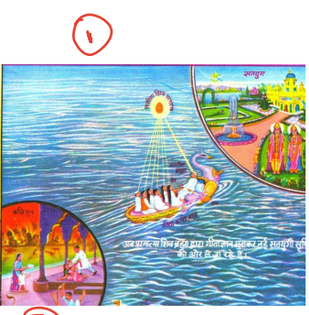

उत्तर:-1.सच्चे ब्राह्मणों का इस पुरानी दुनिया से लंगर उठा हुआ होगा। वह जैसे इस दुनिया का किनारा छोड़ चुके। 2. सच्चे ब्राह्मण वह जो हाथों से काम करें और बुद्धि सदा बाप की याद में रहे अर्थात् कर्मयोगी हो। 3. ब्राह्मण अर्थात् कमल फूल समान। 4. ब्राह्मण अर्थात् सदा आत्म-अभिमानी रहने का पुरुषार्थ करने वाले। 5. ब्राह्मण अर्थात् काम महाशत्रु पर विजय प्राप्त करने वाले।

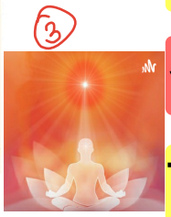

ओम् शान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को

समझाते हैं। बच्चे कौन? यह ब्राह्मण। यह कभी भूलो मत कि हम ब्राह्मण हैं, देवता बनने वाले हैं। वर्णों को भी याद करना पड़ता है। यहाँ तुम आपस में सिर्फ ब्राह्मण ही ब्राह्मण हो। ब्राह्मणों को बेहद का बाप पढ़ाते हैं। Mind well यह ब्रह्मा नहीं पढ़ाते हैं। शिवबाबा पढ़ाते हैं ब्रह्मा द्वारा। only ब्राह्मणों को ही पढ़ाते हैं। शूद्र से ब्राह्मण बनने बिगर देवी-देवता बन नहीं सकेंगे। वर्सा शिवबाबा से मिलता है। वह शिवबाबा तो सबका बाप है। इस ब्रह्मा को ग्रेट ग्रेट ग्रैन्ड फादर कहा जाता है। लौकिक बाप तो सबको होते हैं। पारलौकिक बाप को भक्ति मार्ग में याद करते हैं। अब तुम बच्चे समझते हो यह है अलौकिक बाप जिनको कोई नहीं जानते। भल ब्रह्मा का मन्दिर है, यहाँ भी प्रजापिता आदि देव का मन्दिर है। उनको कोई महावीर कहते हैं, दिलवाला भी कहते हैं। परन्तु वास्तव में दिल लेने वाला है शिवबाबा, न कि प्रजापिता आदि देव ब्रह्मा। सब आत्माओं को सदा सुखी बनाने वाला, खुश करने वाला एक ही बाप है। यह भी सिर्फ तुम ही जानते हो। दुनिया में तो मनुष्य कुछ नहीं

Mind very well...

चढ़ाओ नशा...

25-02-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

जानते। तुच्छ बुद्धि हैं। हम ब्राह्मण ही शिवबाबा से वर्सा ले रहे हैं। तुम भी यह घड़ी-घड़ी भूल जाते हो। याद है बड़ी सहज। योग अक्षर संन्यासियों ने रखा है। तुम तो बाप को याद करते हो। योग कॉमन अक्षर है। इनको योग आश्रम भी नहीं कहेंगे, बच्चे और बाप बैठे हैं। बच्चों का फर्ज है - बेहद के बाप को याद करना। हम ब्राह्मण हैं, डाडे से वर्सा ले रहे हैं ब्रह्मा द्वारा इसलिए शिवबाबा कहते हैं (As Much As Possible) जितना हो सके याद करते रहो। चित्र भी भल रखो तो याद रहेगी। हम ब्राह्मण हैं, बाप से वर्सा लेते हैं।

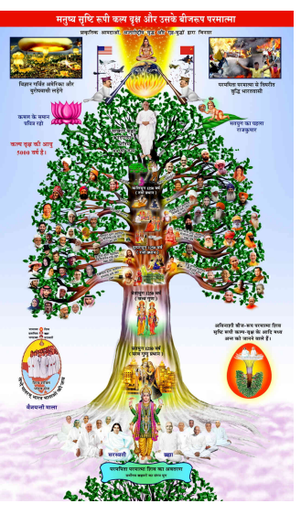

ब्राह्मण कभी अपनी जाति को भूलते हैं क्या? तुम शूद्रों के संग में आने से ब्राह्मणपना भूल जाते हो। ब्राह्मण तो देवताओं से भी ऊंच हैं क्योंकि (Because) तुम ब्राह्मण नॉलेजफुल हो। भगवान को जानी जाननहार कहते हैं ना। उसका भी अर्थ नहीं जानते। ऐसे नहीं कि सबके दिलों में क्या है वह बैठ देखते हैं। नहीं, उनको सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का नॉलेज है। वह बीजरूप है। झाड़ के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। तो ऐसे बाप को बहुत याद करना है। इनकी आत्मा भी उस बाप

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्॥
हे अर्जुन! तू सम्पूर्ण भूतोंका सनातन बीज मुझको ही जान। मैं बुद्धिमानोंकी बुद्धि और तेजस्वियोंका तेज हूँ॥ १०॥ अध्याय- 7

बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्।
धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ॥
हे भरतश्रेष्ठ! मैं बलवानोंका आसक्ति और कामनाओंसे रहित बल अर्थात् सामर्थ्य हूँ और सब भूतोंमें धर्मके अनुकूल अर्थात् शास्त्रके अनुकूल काम हूँ॥ ११॥

Points: ज्ञान योग धारणा M.imp.

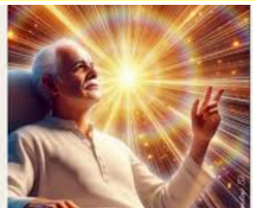

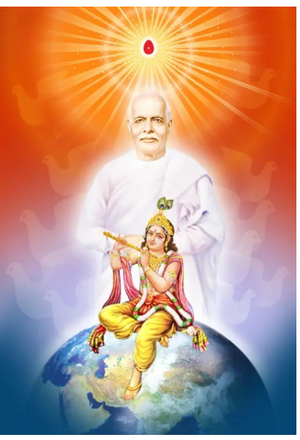

को याद करती है। वह बाप कहते हैं यह ब्रह्मा भी मुझे याद करेंगे तब यह पद पायेंगे। तुम भी याद करेंगे तब पद पायेंगे। पहले-पहले तुम अशरीरी आये थे फिर अशरीरी बनकर वापिस जाना है।

Mind It...

और सब तुमको दु:ख देने वाले हैं, उनको क्यों याद करेंगे। जबकि मैं तुमको मिला हूँ, मैं तुमको नई दुनिया में ले चलने आया हूँ। वहाँ कोई दु:ख नहीं।

जरा सोचो तो सही...

Point to be Noted

वह है दैवी संबंध। यहाँ पहले-पहले दु:ख होता है स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध में क्योंकि विकारी बनते हैं।

तुमको अब मैं उस दुनिया का लायक बनाता हूँ, जहाँ विकार की बात नहीं रहती। यह काम

Refer Last Pg-17

महाशत्रु गाया हुआ है जो आदि-मध्य-अन्त दु:ख देता है। क्रोध के लिए ऐसे नहीं कहेंगे कि यह आदि-मध्य-अन्त दु:ख देता है, नहीं। काम को जीतना है। वही आदि-मध्य-अन्त दु:ख देता है। पतित बनाता है। पतित अक्षर विकार पर लगता है। इस दुश्मन पर जीत पानी है। तुम जानते हो

"हम स्वर्ग के देवी-देवता बन रहे हैं।" जब तक यह निश्चय नहीं तो कुछ पा नहीं सकेंगे।

ये पक्का समझ लो..

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

25-02-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

So, Be Prepared

swaman

मैं मन्सा-वाचा-कर्मणा एक्यूरेट हूं

01/01/01

एक भाषा

एक धर्म

एक राज्य

Jewels of Murlis

बाप समझाते हैं बच्चों को मन्सा-वाचा-कर्मणा एक्यूरेट बनना है। मेहनत है। दुनिया में यह किसको पता नहीं कि तुम भारत को स्वर्ग बनाते हो। आगे चलकर समझेंगे। (Coming soon...) चाहते भी हैं वन वर्ल्ड, वन राज्य, वन रिलीजन, वन भाषा हो। तुम समझा सकते हो - सतयुग में आज से 5 हज़ार वर्ष पहले एक राज्य, एक धर्म था जिसको स्वर्ग कहा जाता है। रामराज्य और रावण राज्य को भी कोई नहीं जानते। 100 प्रतिशत तुच्छ बुद्धि से अब तुम स्वच्छ बुद्धि बनते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप बैठ तुमको पढ़ाते हैं। (m.m.m....imp.) सिर्फ बाप की मत पर चलो। बाप कहते हैं कि पुरानी दुनिया में रहते कमल फूल समान पवित्र रहो। मुझे याद करते रहो। बाप आत्माओं को समझाते हैं। मैं आत्माओं को ही पढ़ाने आया हूँ इन आरगन्स द्वारा। तुम आत्मायें भी आरगन्स द्वारा सुनती हो। बच्चों को आत्म-अभिमानी बनना है। यह तो पुराना छी-छी शरीर है। तुम ब्राह्मण पूजा के लायक नहीं हो। तुम (v/s) गायन लायक हो, पूजने लायक देवतायें हैं। तुम

श्रीमत पर विश्व को पवित्र स्वर्ग बनाते हो इसलिए तुम्हारा गायन है। तुम्हारी पूजा नहीं हो सकती।

गायन सिर्फ तुम ब्राह्मणों का है, न कि देवताओं का। बाप तुमको ही शूद्र से ब्राह्मण बनाते हैं।

जगत अम्बा वा ब्रह्मा आदि के मन्दिर बनाते हैं परन्तु उनको यह पता नहीं है कि यह कौन हैं? जगत पिता तो ब्रह्मा हुआ ना। उनको देवता नहीं कहेंगे।

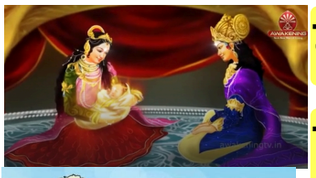

देवताओं की आत्मा और शरीर दोनों पवित्र हैं। अब तुम्हारी आत्मा पवित्र होती जाती है। पवित्र शरीर नहीं है।

अब तुम ईश्वर की मत पर भारत को स्वर्ग बना रहे हो। तुम भी स्वर्ग के लायक बन रहे हो। सतोप्रधान जरूर बनना है।

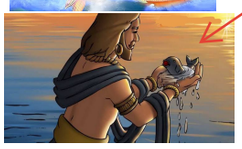

सिर्फ तुम ब्राह्मण ही हो जिनको बाप बैठ पढ़ाते हैं। ब्राह्मणों का झाड़ वृद्धि को पाता रहेगा। ब्राह्मण जो पक्के बन जायेंगे वह फिर जाकर देवता बनेंगे।

यह नया झाड़ है। माया के तूफान भी लगते हैं। सतयुग में कोई तूफान नहीं लगता। यहाँ माया

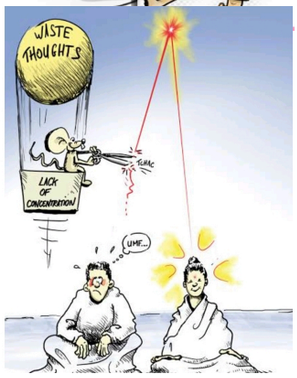

बाबा की याद में रहने नहीं देती। हम चाहते हैं बाबा की याद में रहें। तमो से सतोप्रधान बनें। सारा मदार है याद पर। भारत का प्राचीन योग मशहूर है। विलायत वाले भी चाहते हैं प्राचीन योग कोई

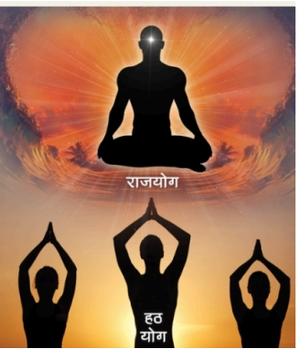

आकर सिखलाये। अब योग भी दो प्रकार के हैं - एक हैं हठयोगी, दूसरे हैं राजयोगी। तुम हो राजयोगी। यह भारत का प्राचीन राजयोग है जो बाप ही सिखलाते हैं। सिर्फ गीता में मेरे बदले श्रीकृष्ण का नाम डाल दिया है। कितना फर्क हो गया है। शिवजयन्ती होती है तो तुम्हारी वैकुण्ठ की भी जयन्ती होती है, जिसमें श्रीकृष्ण का राज्य है। तुम जानते हो शिवबाबा की जयन्ती है तो गीता की भी जयन्ती है। वैकुण्ठ की भी जयन्ती होती है जिसमें तुम पवित्र बन जायेंगे। कल्प पहले मुआफिक स्थापना करते हैं। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो। याद न करने से माया कुछ न कुछ विकर्म करा देती है। याद नहीं किया और लगी चमाट। याद में रहने से चमाट नहीं खायेंगे। यह बॉक्सिंग होती है। तुम जानते हो - हमारा दुश्मन कोई मनुष्य नहीं है। रावण है दुश्मन।

Attention Please..!

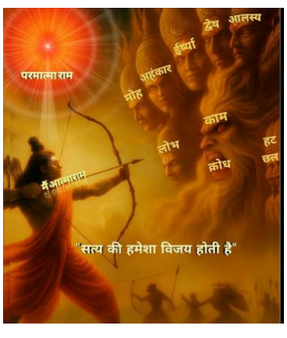

25/03/2025
बाप सर्वशक्तिमान है या ड्रामा? ड्रामा है फिर उनमें जो एक्टर्स हैं उनमें सर्वशक्तिमान कौन है? शिवबाबा। और फिर रावण। आधाकल्प है राम राज्य, आधाकल्प है रावण राज्य। घड़ी-घड़ी बाप

बाप कहते हैं इस समय की शादी बरबादी है। एक-

दो की बरबादी करते हैं। (पतित बना देते हैं) अब पारलौकिक बाप ने आर्डीनेन्स निकाला है, बच्चे यह काम महाशत्रु है। इन पर जीत पहनो और पवित्रता की प्रतिज्ञा करो। कोई भी पतित न बनें। जन्म-जन्मान्तर तुम पतित बने हो इस विकार से इसलिए काम महाशत्रु कहा जाता है। साधू-सन्त सब कहते हैं पतित-पावन आओ। सतयुग में पतित कोई होता नहीं। बाप आकर ज्ञान से सर्व की सद्गति करते हैं। अब सभी दुर्गति में हैं। ज्ञान देने वाला कोई नहीं है। ज्ञान देने वाला एक ही ज्ञान सागर है। ज्ञान से दिन है। दिन है राम का, रात है रावण की। इन अक्षरों का यथार्थ अर्थ भी तुम बच्चे समझते हो। सिर्फ पुरुषार्थ में कमजोरी है। बाप तो बहुत अच्छी रीति समझाते हैं। तुमने 84 जन्म पूरे किये हैं, अब पवित्र बनकर वापस जाना है। तुमको तो शुद्ध अहंकार होना चाहिए। हम आत्मायें बाबा की मत पर इस भारत को स्वर्ग बना रहे हैं, जिस स्वर्ग में फिर राज्य करेंगे। जितनी मेहनत करेंगे उतना पद पायेंगे। चाहे राजा-रानी बनो, चाहे प्रजा बनो। राजा-रानी कैसे बनते हैं, वह

The lacking is in our Efforts

Point to be Noted

Baba is giving his 100%

Simple Math..

Choice is All yours

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

भी देख रहे हो। फालो फादर गाया जाता है, अब की बात है। लौकिक सम्बन्ध के लिए नहीं कहा जाता। यह बाप मत देते हैं - मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। तुम समझते हो हम अभी श्रीमत पर चलते हैं। बहुतों की सेवा करते हैं। बच्चे, बाप के पास आते हैं तो शिवबाबा भी ज्ञान से बहलाते हैं। यह भी तो सीखते हैं ना। शिवबाबा कहते हैं मैं आता हूँ सवेरे को। अच्छा फिर कोई मिलने के लिए आते हैं तो क्या यह नहीं समझायेंगे। ऐसे कहेंगे क्या कि बाबा आप आकर समझाओ, मैं नहीं समझाऊंगा। यह बड़ी गुप्त गुह्य बातें हैं ना। मैं तो सबसे अच्छा समझा सकता हूँ। तुम ऐसे क्यों समझते हो कि शिवबाबा ही समझाते हैं, यह नहीं समझाते होंगे। यह भी जानते हो कल्प पहले इसने समझाया है, तब तो यह पद पाया है। मम्मा भी समझाती थी ना। वह भी ऊंच पद पाती है। मम्मा-बाबा को सूक्ष्मवतन में देखते हैं तो बच्चों को फालो फादर करना है। सरेन्डर होते भी गरीब हैं, साहूकार हो न सकें। गरीब ही कहते हैं - बाबा यह सब कुछ आपका है। शिवबाबा तो

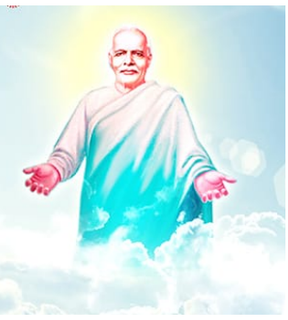

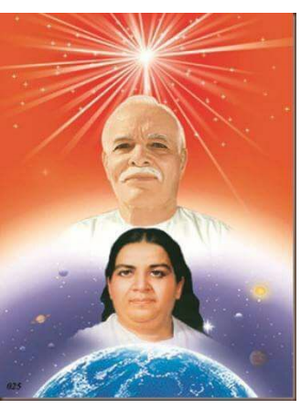

दाता है। वह कभी लेता नहीं है। बच्चों को कहते हैं - यह सब कुछ तुम्हारा है। मैं अपने लिए महल न यहाँ, न वहाँ बनाता हूँ। तुमको स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। अब इन ज्ञान रत्नों से झोली भरनी है। मन्दिर में जाकर कहते हैं मेरी झोली भरो। परन्तु किस प्रकार की, किस चीज़ की झोली भर दो... झोली भरने वाली तो लक्ष्मी है, जो पैसा देती है। शिव के पास तो जाते नहीं, शंकर के पास जाकर कहते हैं। समझते हैं शिव और शंकर एक हैं परन्तु ऐसे थोड़ेही है।

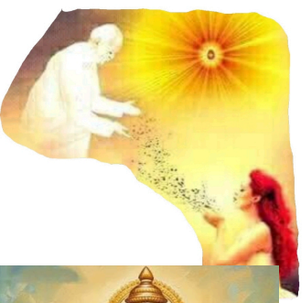

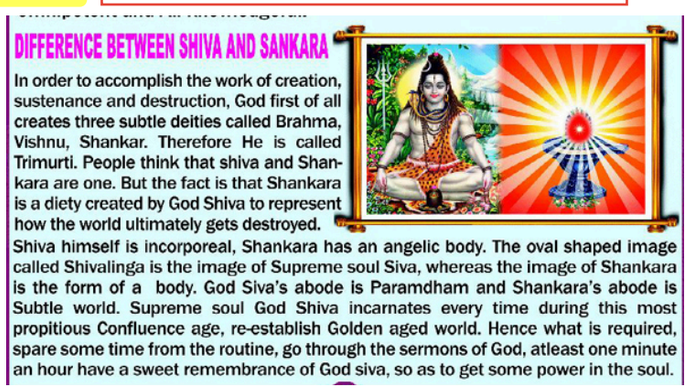

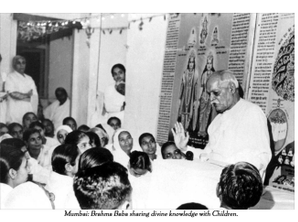
Mumbai: Brahma Baba sharing divine knowledge with Children.

बाप आकर सत्य बात बताते हैं। बाप है ही दु:ख हर्ता सुख कर्ता। तुम बच्चों को गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है। धंधा भी करना है। हर एक अपने लिए राय पूछते हैं - बाबा हमको इस बात में झूठ बोलना पड़ता है। बाप हर एक की नब्ज़ देख राय देते हैं क्योंकि बाप समझते हैं मैं कहूँ और कर न सकें ऐसी राय ही क्यों दूँ। नब्ज देख राय ही ऐसी

समझा?

दी जाती है जो कर भी सके। कहूँ और करे नहीं तो नाफरमानबरदार की लाइन में आ जाए। हर एक का अपना-अपना हिसाब-किताब है। सर्जन तो

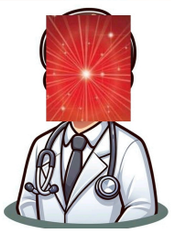

एक ही है, उनके पास आना पड़े। वह पूरी राय देंगे। सबको पूछना चाहिए - "बाबा इस हालत में हमको कैसे चलना चाहिए? अब क्या करें?" बाप स्वर्ग में तो ले जाते हैं। तुम जानते हो हम स्वर्गवासी तो बनने वाले हैं। अब हम संगम-वासी

हैं। तुम अब न नर्क में हो, न स्वर्ग में हो। जो-जो ब्राह्मण बनते हैं उनका लंगर इस छी-छी दुनिया से उठ चुका है। तुमने कलियुगी दुनिया का किनारा

छोड़ दिया है। कोई ब्राह्मण तीखा (Fast) जा रहा है याद की यात्रा में, कोई (V/S) कम। कोई हाथ छोड़ देते हैं

अर्थात् फिर कलियुग में चले जाते हैं। तुम जानते हो खिवैया हमको अब ले जा रहा है। वह यात्रा तो अनेक प्रकार की है। तुम्हारी एक ही यात्रा है। यह बिल्कुल न्यारी यात्रा है। हाँ तूफान आते हैं जो याद

को तोड़ देते हैं। इस याद की यात्रा को अच्छी रीति पक्का करो। मेहनत करो। तुम कर्मयोगी हो। जितना हो सके हथ कार डे दिल यार डे...

बाप कहते हैं
हाथों से काम करो,
दिल बाप की याद में रहे।

आधाकल्प तुम आशिक माशूक को याद करते आये हो। बाबा यहाँ बहुत दु:ख है, अब हमको सुखधाम का मालिक बनाओ। याद की यात्रा में रहेंगे तो तुम्हारे पाप खलास हो जायेंगे। तुमने ही स्वर्ग का वर्सा पाया था, अब गँवाया है। भारत स्वर्ग था तब कहते हैं प्राचीन भारत। भारत को ही बहुत मान देते हैं। सबसे बड़ा भी है, सबसे पुराना भी है।

Point to be Noted

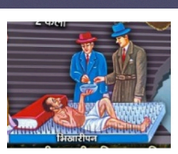

अब तो भारत कितना गरीब है इसलिए सब उनको मदद करते हैं। वो लोग समझते हैं, हमारे पास बहुत अनाज हो जायेगा। कहाँ से मंगाना नहीं पड़ेगा परन्तु यह तो तुम जानते हो - विनाश सामने खड़ा है जो अच्छी तरह से समझते हैं उन्हों को अन्दर बहुत खुशी रहती है। प्रदर्शनी में कितने आते हैं। कहते हैं तुम सत्य कहते हो परन्तु यह समझें कि हमको बाप से वर्सा लेना है, यह थोड़ेही बुद्धि में बैठता है। यहाँ से बाहर निकले खलास।

तुम जानते हो बाबा हमको स्वर्ग में ले जाता है। वहाँ न गर्भ जेल में, न उस जेल में जायेंगे। अभी जेल की यात्रा भी कितनी सहज हो गई है। फिर सतयुग में कभी जेल का मुंह देखने को नहीं

Example of Bangladesh

मिलेगा। दोनों जेल नहीं रहेंगी। यहाँ सब यह माया का पाम्प है। बड़ों-बड़ों को जैसे खलास कर देते हैं। आज बहुत मान दे रहे हैं, कल मान ही खलास। आज हर एक बात क्वीक होती है। मौत भी क्वीक होते रहेंगे। सतयुग में ऐसे कोई उपद्रव होते नहीं। आगे चल देखना क्या होता है। बहुत भयंकर सीन है। तुम बच्चों ने साक्षात्कार भी किया है। बच्चों के लिए मुख्य है याद की यात्रा। अच्छा!

Are you ready?
to watch it

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

मन (विचार), वाणी (वचन) और कर्म (कार्य) की एकता :- यह पवित्रता, ईमानदारी और चरित्र निर्माण का मूल सिद्धांत है, जिसका अर्थ है जो आप सोचते हैं, वही बोलते हैं और वही करते हैं। इसका उद्देश्य जीवन में सत्य, विनम्रता और विचारों की पवित्रता स्थापित करना है।

TRIKARANASHUDDHI

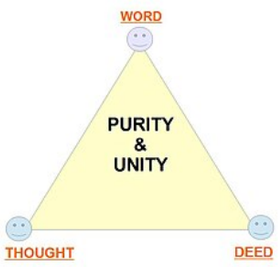

1) मन्सा-वाचा-कर्मणा बहुत-बहुत एक्यूरेट बनना है। ब्राह्मण बनकर कोई भी शूद्रों के कर्म नहीं करने हैं।

मनसा = वाचा = कर्मणा

2) बाबा से जो राय मिलती है उस पर पूरा-पूरा चलकर फरमानबरदार बनना है। कर्मयोगी बन हर कार्य करना है। सर्व की झोली ज्ञान रत्नों से भरनी है।

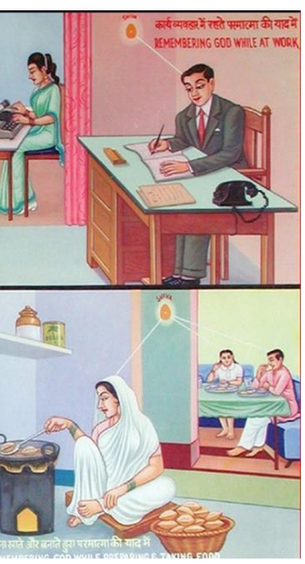

Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

25-02-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- डबल लाइट बन कर्मातीत अवस्था का अनुभव करने वाले कर्मयोगी भव

Finale Achievement

जैसे कर्म में आना स्वाभाविक हो गया है

वैसे कर्मातीत होना भी स्वाभाविक हो जाए,

इसके लिए डबल लाइट रहो।

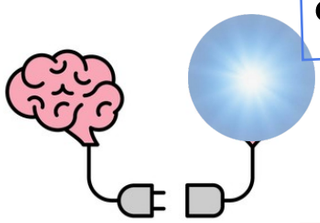

डबल लाइट रहने के लिए

(1) कर्म करते हुए स्वयं को ट्रस्टी समझो और

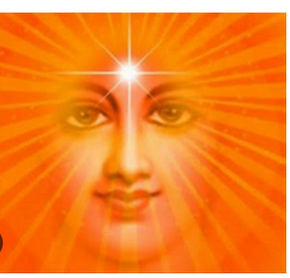

(2) आत्मिक स्थिति में रहने का अभ्यास करो, इन्हीं दो बातों का अटेन्शन रखने से सेकण्ड में कर्मातीत, सेकेण्ड में कर्मयोगी बन जायेंगे।

निमित्त मात्र कर्म करने के लिए कर्मयोगी बनो फिर कर्मातीत अवस्था का अनुभव करो।

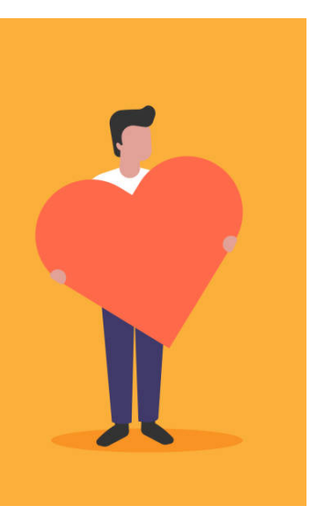

स्लोगन:- जिनकी दिल बड़ी है उनके लिए असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं।

Points: ज्ञान योग धारणा से

ये अव्यक्त इशारे -

एकता और विश्वास की विशेषता द्वारा सफलता सम्पन्न बनो

आपमें जो भी विशेषतायें हैं, उनको सामने रखो, कमजोरियों को नहीं, तो Result:- अपने आप में फेथ रहेगा।

कमजोरी की बात को ज्यादा नहीं सोचना, तो सदा खुशी में आगे बढ़ते जायेंगे।

प्रैक्टिकल में अनेक देश, अनेक भाषायें, अनेक रूप-रंग लेकिन अनेकता में भी सबके दिल में एकता है ना! क्योंकि दिल (1) में एक बाप है। (2) एक श्रीमत पर चलने वाले हो। (3) अनेक भाषाओं में होते हुए भी मन का गीत, मन की भाषा एक है।

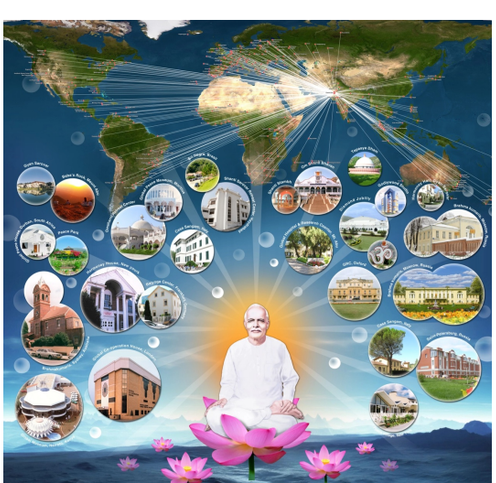

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः॥

अर्जुन बोले—हे कृष्ण! तो फिर यह मनुष्य स्वयं न चाहता हुआ भी बलात् लगाये हुएकी भाँति किससे प्रेरित होकर पापका आचरण करता है? ॥ ३६ ॥

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्॥

श्रीभगवान् बोले—रजोगुणसे उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है, यह बहुत खानेवाला अर्थात् भोगोंसे कभी न अघानेवाला और बड़ा पापी है, इसको ही तू इस विषयमें वैरी जान॥ ३७ ॥

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्॥

जिस प्रकार धूएँसे अग्नि और मैलसे दर्पण ढका जाता है तथा जिस प्रकार जेरसे गर्भ ढका रहता है, वैसे ही उस कामके द्वारा यह ज्ञान ढका रहता है॥ ३८ ॥

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च॥

और हे अर्जुन! इस अग्निके समान कभी न पूर्ण होनेवाले कामरूप ज्ञानियोंके नित्य वैरीके द्वारा मनुष्यका ज्ञान ढका हुआ है॥ ३९ ॥

Enemy Forever

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम्॥

इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि—ये सब इसके वासस्थान कहे जाते हैं। यह काम इन मन, बुद्धि और इन्द्रियोंके द्वारा ही ज्ञानको आच्छादित करके जीवात्माको मोहित करता है॥ ४० ॥

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम्॥

इसलिये हे अर्जुन! तू पहले इन्द्रियोंको वशमें करके इस ज्ञान और विज्ञानका नाश करनेवाले महान् पापी कामको अवश्य ही बलपूर्वक मार डाल॥ ४१ ॥

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः॥

इन्द्रियोंको स्थूल शरीरसे पर यानी श्रेष्ठ, बलवान् और सूक्ष्म कहते हैं; इन इन्द्रियोंसे पर मन है, मनसे भी पर बुद्धि है और जो बुद्धिसे भी अत्यन्त पर है वह आत्मा है॥ ४२ ॥

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्॥

इस प्रकार बुद्धिसे पर अर्थात् सूक्ष्म, बलवान् और अत्यन्त श्रेष्ठ आत्माको जानकर और बुद्धिके द्वारा मनको वशमें करके हे महाबाहो! तू इस कामरूप दुर्जय शत्रुको मार डाल॥ ४३ ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३ ॥

~~o~~

Formidable Enemy

Biggest enemy of soul/human Being is not any person/religion, but the 'Kaam vikar' is.

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥

विषयोंका चिन्तन करनेवाले पुरुषकी उन विषयोंमें आसक्ति हो जाती है, आसक्तिसे उन विषयोंकी कामना उत्पन्न होती है और कामनामें विघ्न पड़नेसे क्रोध उत्पन्न होता है॥ ६२ ॥

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

क्रोधसे अत्यन्त मूढ़भाव उत्पन्न हो जाता है, मूढ़भावसे स्मृतिमें भ्रम हो जाता है, स्मृतिमें भ्रम हो जानेसे बुद्धि अर्थात् ज्ञानशक्तिका नाश हो जाता है और बुद्धिका नाश हो जानेसे यह पुरुष अपनी स्थितिसे गिर जाता है॥ ६३ ॥

Soul

विषयो के चिंतन से आसक्ति
आसक्ति से कामना/काम
कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध
क्रोध से *अत्यंत* मूढ़भाव
मूढ़भाव से स्मृतिमें भ्रम
स्मृति में भ्रम से बुद्धि अर्थात ज्ञानशक्ति का नाश
बुद्धि का नाश हो जाने से पुरुष(आत्मा) अपनी स्थिति से गिर जाता है।

गीता अध्याय 2 - श्लोक 62,63

So, ultimate Root cause as per revered "Geeta" is

Kaam vikar